अयोध्या में संत परम्पराः एक विमर्श

–डॉ. अखिलेश कुमार त्रिपाठी एवं राघवेन्द्र पाण्डेय*
असि.प्रो. समाजशास्त्र : टी0एन0पी0जी0 कॉलेज, टाण्डा, अम्बेडकरनगर
शोधार्थी समाजशास्त्र : डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या

प्रस्तावना

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः।।

इस श्लोक का सरल अर्थ यह है कि अयोध्या, मथुरा, माया यानी हरिद्वार, काशी, कांचीपुरम, अवंतिका यानी उज्जैन, द्वारिकापुरी ये सातों पवित्र व मोक्षदायीनी पुरियां अर्थात् नगर हैं।

अयोध्या एक नगरी ही नहीं है यह एक धार्मिक नगरी है जहां राजा इक्ष्वाकु से राजा श्रीरामचन्द्र के वंश तक का राज रहा है। अयोध्या एक आध्यात्मिक नगरी है, यहां आध्यात्म के हर पहलुओं का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। अयोध्या कि बात कि जाय और अयोध्या के संतो की बात ना हो। अगर देखा जाय तो अयोध्या के संत हमेशा की तरह समाज के निर्माण, सृजन, संस्कार के साथ–साथ लोगों को अध्यात्म के प्रति प्रेरित करते रहे हैं और लक्ष्य की ओर अग्रसर भी हैं। अगर अयोध्या के शाब्दिक अर्थ की बात कि जाय तो **जिसके साथ युद्ध करना असम्भव हो और जिसे पराजित न किया जा सके।**

अयोध्या के संतों की परम्परा भी विराट है यहां के संतों ने अयोध्या के अलग–अलग स्थानों पर रहते हुए भी उनके उद्देश्य, धार्मिक प्रवृति, धर्म के प्रति उनका लगाव व सनातन परम्परा को बरकरार रखा है। अयोध्या के संतों में धर्म के प्रति उनके उद्देश्यों में समानता दिखाई पड़ता है। अयोध्या में जप–तप,योग, ध्यान, वैराग्य, साधना व भक्ति देखने को मिलता है। अयोध्या में कुछ संतों के व्यक्तित्व जो प्रभु श्रीराम नाम को अयोध्या में सभी के अन्दर बसा दिया है।

संत एक सनातनी परम्परा है, यह कहा जाय कि संत सनातन संस्कृति के रक्षक हैं तो यह पूर्णतया सत्य है। आदि शंकराचार्य जी ने भारत देश के पूर्बी प्रांत में जगन्नाथपुरी गोवर्धन पीठ की स्थापना किया, पश्चिमी में द्वारका शारदा पीठ, उत्तर में ज्योतिर्मठ पीठ व दक्षिणी प्रांत में श्रंगेरी पीठ की स्थापना करने के बाद भारत देश के जितने भी पंथों में संत समाज बंटे हुए हैं उन सभी संत समाज को दस पदनाम देकर संगठित किया है।

दस नाम जो पद देकर संगठित किया है वह हैं– तीर्थ, आश्रम, अरण्य, पर्वत, भारती, वन, सरस्वती, सागर, पुरी व गिरि हैं। यह पदनाम देकर शंकराचार्य जी ने बिखरे हुए संतों के समाज को एकजुट करने के लिए किया है। और संतों सन्यासियों के बीच से ही नागा सन्यासियों का उदय हुआ।

संत बनना आसान नहीं है कठिन परीक्षाओं से गुजरना पड़ता है। संत बनने कि प्रेरणा प्रायः बाल्यकाल से ही दिखने लगता है। व्यवहार, विचार, रहन–सहन, समाज में रहकर समाज से हटा हुआ रहता है। ईश्वर के प्रति लगाव, धर्म में रूचि, संतों के प्रति झुकाव, लोगों की सेवा जैसा भाव देखने को मिलते हैं। कोई भी व्यक्ति अचानक से संत नहीं बन जाता है इसके लिए कठिन तप, परिश्रम, कठिन परीक्षाओं का सामना करना पड़ता है। संत बनने के लिए कोई भी सन्यासी या व्यक्ति किसी अखाड़े में जाता है तो उसे कई तरह कि परीक्षाएं देनी पड़ती है। सर्वप्रथम वह अखाड़े के संत व प्रबन्धक यह जांच करते है कि वह क्यों संत बनना चाहता है उसकी पृष्ठभूमि आदि के जांच करने के बाद ही अखाड़े में शामिल किया जाता है। अखाड़े में शामिल होने के बाद वह उच्च संत की सेवा करता है वहा के उच्च संत से वह दीक्षा प्राप्त करता है और वह उस संत परम्परा का पालन करने के लिए

वचनबद्ध होता है। साथ ही साथ वह उस परम्परा के बारे में अध्ययन करता है और कर्मकाण्डों का ज्ञान अर्जित करने के बाद वह निरन्तर धर्म से सम्बन्धित कार्य करता है और साथ ही साथ उस अखाड़े के परम्परा का अनुसरण करता है।

इसी क्रम में अयोध्या के कुछ प्रमुख संतों का अध्ययन प्रस्तुत है–

1– बगही बाबा (तपस्वी श्री नारायण दास जी)

सर्वप्रथम–1– **बगही बाबा (तपस्वी श्री नारायण दास जी),** श्रीराम की पावन नगरी अयोध्या में सरयू तट के पास बगही बाबा का फटिक शिला आश्रम है। बगही बाबा का जन्म बिहार के सीतामढ़ी जिले के बगही गांव में हुआ था। बाबा जी के पिता जी का नाम श्री रूपन यादव था। बगही बाबा श्रीराम नाम के प्रति लोगों को प्रेरित करते थे। वह राम नाम बोलते हुए राम नाम में ही लीन रहा करते थे। कई प्रकार कि घटनाओं अन्न भोजन को लेकर हुईं जिनकी वजह से बाबा ने यह संकल्प लिया कि वह आजीवन गाय के दूध पर ही अपना जीवन यापन करेंगे। बगही बाबा ने विश्व कल्याण के लिए सीताराम नाम यज्ञ का आयोजन किया वह स्वयं सरयू का जल पीकर तपस्या में लीन रहे। इस यज्ञ के पूर्ण होने के बाद ही यह स्थल स्फटिक शिला बगही बाबा (तपस्वी नारायण दास जी) के नाम से ही प्रसिद्ध हो गया। बगही बाबा अपने भक्तों के प्रेम व राम नगरी की संत परम्परा के मुकुट के रूप में माने जाते हैं।

2–संत राममंगल दास जी

2–संत राममंगल दास जी, संत राममंगल दास जी का जन्म सीतापुर जिले के तहसिल सिद्धौली में हुआ था। बाल्यकाल से ही वह धर्मानुरागी थे वह अयोध्या आकर रामघाट के पास एक

बरगद के वृक्ष के नीचे ही अपनी धूनि रमाई थी। उन्होंने श्रीरामजन्मभूमि के पीछे अपना आश्रम बनाया जो वर्तमान में गोकुल भवन के रूप में उनके भक्तों में पहचान है। संत राममंगल दास जी द्वारा लिखित साहित्यों में भक्त भगवंत चरितावली एवं चरितामृत प्रमुख हैं।

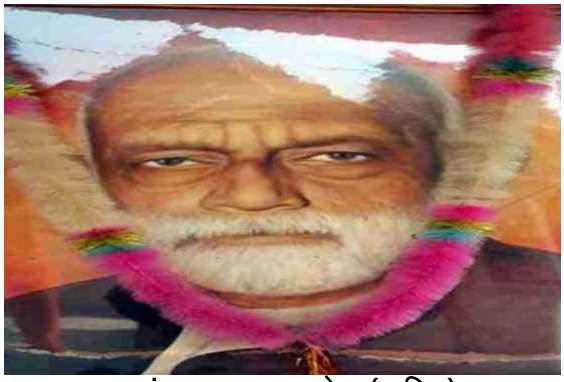

3–पं राम कृष्ण पाण्डेय (आमिल)

3–पं राम कृष्ण पाण्डेय (आमिल), पं राम कृष्ण पाण्डेय जी का जन्म अंबाला में हुआ था। 21 वर्ष की उम्र में वह अयोध्या आ गए। यहीं पर उन्होंने शाक्त संप्रदाय के तहत अपनी धूनी रमाई। कुछ समय बाद उन्होंने अध्यात्म शक्ति पीठ की स्थापना किया। उन्होंने मंत्र, चिंतन, आइना, तंत्र परिचय, भाव विंब, अंर्तयात्रा आदि पुस्तकों की रचना किया।

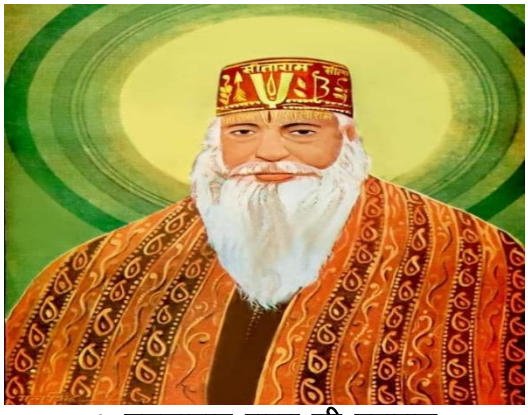

4–युगलानन्य शरण जी महाराज

4–युगलानन्य शरण जी महाराज, युगलानन्य शरण जी महाराज नालंदा के ईशरामपुर में जन्में थे। स्वामी जी का नाम वैष्णव सम्प्रदाय में बहुत सम्मान से लिया जाता है व आपका विशिष्ट स्थान है। महाराज जी को गायन के साथ–साथ संस्कृत, अरबी व उर्दू का भी ज्ञान था। युगलानन्य शरण जी महाराज ने रघुवर गण दर्पण, मधुर मंजमाला, शत सिद्धान्त सार समेत 12 ग्रंथों का प्रणयन भी किया है। अयोध्या में स्थित लक्ष्मण किला के संस्थापक हैं।

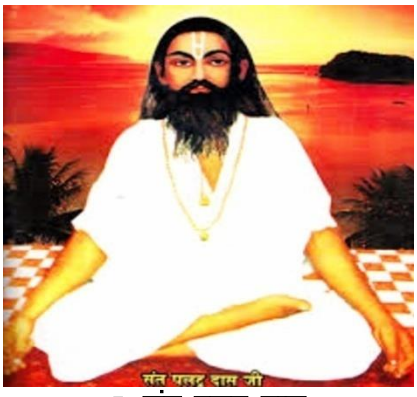

5–संत पलटू दास

5–संत पलटू दास, संत पलटू दास जी का जन्म जलालपुर के छांछू में हुआ था। गोविंद साहब जी ने पलटू दास जी में पल–पल भर में अजपा जाप में रम जाने की वजह से पलटू कहना शुरू कर दिया। संत पलटू दास जी के विचार में आध्यात्मिकता उच्च स्तर पर होने की वजह से रजनीश ओशो ने कई दिनों तक प्रवचन किया जो अजहू चेत गंवार, दीपक बारा नाम का आदि पुस्तकों के रूप में मौजूद है। अयोध्या में ही रामकोट क्षेत्र में संत पलटू दास जी की समाधि है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- दैनिक समाचार पत्र दैनिक जागरण, रविवार 18 अप्रैल, 2021
- https://www.shriayodhyanyas.org/
- Ayodhya Ka Dharmik Etihas, Shiv Kumar Singh-2002
- पोददार. हनुमानप्रसाद. (2014). श्रीरामचरितमानस. गोरखपुर: गीताप्रेस.
- शर्मा,चतुर्वेदी .द्वारिकाप्रसाद. (1950). श्रीबाल्मिकी रामायण. प्रयागराज: रामायण लाल.
- लाल, जालान. मोती. (1982). कल्याण : वामन पुराणांक. गोरखपुर: गीताप्रेस.
- संतवाणी अंक, उनतीसवें वर्ष का विशेषांक, गीता प्रेस, गोरखपुर
- अयोध्या महात्मय (2022), गीता प्रेस, गोरखपुर

❑